

खण्ड 'ग'

गद्यांश पर आधारित प्रश्न

नाना साहब की पुत्री देवी मैना को
भस्म कर दिया गया

1 कानपुर में भीषण हत्याकांड करने के बाद अंगरेजों का सैनिक दल बिदूर की ओर गया। बिदूर में नाना साहब का राजमहल लूट लिया गया पर उसमें बहुत थोड़ी सम्पत्ति अंगरेजों के हाथ लगी। इसके बाद अंगरेजों ने तोप के गोलों से नाना साहब का महल भस्म कर देने का निश्चय किया। सैनिक दल ने जब वहाँ तोपें लगायीं, उस समय महल के बरामदे में एक अत्यन्त सुन्दर बालिका आकर खड़ी हो गयी। उसे देख कर अंगरेज सेनापति को बड़ा आश्चर्य हुआ: क्योंकि महल लूटने के समय वह बालिका वहाँ कहीं दिखाई न दी थी।

1 अंगरेजों ने भीषण हत्याकांड कहाँ किया

क बिदूर ख कानपुर
ग दिल्ली घ झांझी

2 नाना साहब का राजमहल कहाँ था

क बिदूर ख कानपुर
ग अरुत घ झांशी

3 अंगरेजों ने नाना साहब के महल का क्या कर निश्चय किया

क जलत करना ख जला डालना
ग तोपों से नष्ट करना घ दान में देना ।

4 अंगरेज सेनापति का क्या नाम था

क हे ख कलाइय ग कैनिंग घ अउटरम

5 राजमहल में कौन सा समाश है

क छठ्ठ ख तत्पुरुष ग आप्ययीभाष घ द्विगु

2 सन 57 के सितम्बर मास में अर्द्धरात्रि के समय चाँदनी में एक बालिका स्वच्छ उज्ज्वल वस्त्र पहने हुए नानासाहब के भगनावशिष्ट प्रासाद के ढेर पर बैठी रो रही थी। पास ही जनरल अउटरम की सेना भी ठहरी थी। कुछ सैनिक रात्रि के समय रोने की आवाज सुनकर वहाँ गये। बालिका केवल रो रही थी। सैनिकों के प्रश्न का कोई उत्तर नहीं देती थी। इसके बाद कराल रूपधारी जनरल अउटरम भी वहाँ पहुँच गया। वह उसे तुरन्त पहिचानकर बोला— ओह! यह नाना की लड़की मैना है! पर वह बालिका किसी ओर न देखती थी और न अपने चारों ओर सैनिकों को देखकर जरा भी नहीं डरी। जनरल अउटरम ने आगे बढ़कर कहा—अंगरेज सरकार की आज्ञा से मैंने तुम्हें गिरफ्तार किया।

1 नानासाहब के भगनावशिष्ट प्रासाद के ढेर पर बैठी कौन रो रही थी।

क मैना ख मेशी ग लक्ष्मी घ थालिका

2 भगनावशिष्ट प्रासाद का आशय है ?

क	अुंदर महल	ख	अुंदर षगीचा
ग	टुटा फुटा महल	घ	टुटा फुटा घर

3 कराल रूपधारी कौन था ?

- क हे
- ख कलाइय
- ग कैनिंग
- घ अउटरम

4 कराल रूपधारी का आशय है ?

- क डरावने रूप में
- ख सुंदर रूप में
- ग दयालु रूप में
- घ करुण रूप में

5 मैना को किसने पहिचाना

- क सैनिकों ने
- ख अउटरम ने
- ग शरण ने
- घ किसी ने नहीं

प्रेमचंद के फटे जूते

1 मैं चेहरे की तरफ देखता हूँ। क्या तुम्हें मालूम है, मेरे साहित्यिक पुरस्के कि तुम्हारा जूता फट गया है और अँगुली बाहर दिख रही है? क्या तुम्हें इसका जरा भी अहसास नहीं है? जरा लज्जा, संकोच या झेंप नहीं है? क्या तुम इतना भी नहीं जानते कि धोती को थोड़ा नीचे खींच लेने से अँगुली ढक सकती है? मगर फिर भी तुम्हारे चेहरे पर बड़ी बेपरवाही, बड़ा विश्वास है! फोटोग्राफर ने जब 'रेडी-प्लीज' कहा होगा, तब परंपरा के अनुसार तुमने मुसकान लाने की कोशिश की होगी, दर्द के गहरे कुए के तल में कहीं पड़ी मुसकान को धीरे-धीरे खींचकर ऊपर निकाल रहे होंगे कि बीच में ही 'क्लिक' करके फोटोग्राफर ने 'थैंक यू' कह दिया होगा। विचित्र है यह अधूरी मुसकान। यह मुसकान नहीं, इसमें उपहास है, व्यंग्य है!

1 फोटो में किसका जूता फटा था

- क लेखक का
- ख कवि का
- ग प्रेमचंद का
- घ हरिशंकर परभाई का

2 साहित्यिक पुरस्के किसे अंशोधित किया गया है

- क हरिशंकर परभाई को
- ख प्रेमचंद को
- ग निराला को
- घ उपरोक्त सभी को

3 प्रेमचंद द्वारा फोटो खिंचाते समय फटे जूते का ध्यान न रखना क्या भाषित करता है

- क वे दिखावा करते थे।
- ख वे बेपरवाह थे।
- ग वे आदमीप्रिय थे।
- घ वे लोकप्रिय थे

4 प्रेमचंद की अधूरी मुसकान में क्या छिपा है ?

- क दिखावा
ख छेपवाही
ग व्यंग्य
घ खुशी का भाव
- 5 इस गद्यांश में किसपर व्यंग्य है ?
क पुराने लेखकों पर
ख सभी लेखकों पर
ग प्रेमचंद पर
घ दिखावे की प्रवृत्ति पर

2 टोपी आठ आने में मिल जाती है और जूते उस जमाने में भी पाँच रुपये से कम में क्या मिलते होंगे। जूता हमेशा टोपी से कीमती रहा है। अब तो जूते की कीमत और बढ़ गई है और एक जूते पर पचीसों टोपियाँ न्योछावर होती हैं। तुम भी जूते और टोपी के आनुपातिक मूल्य के मारे हुए थे। यह विडंबना मुझे इतनी तीव्रता से पहले कभी नहीं चुभी, जितनी आज चुभ रही है, जब मैं तुम्हारा फटा जूता देख रहा हूँ। तुम महान कथाकार, उपन्यास-सम्राट, युग-प्रवर्तक, जाने क्या-क्या कहलाते थे, मगर फोटो में भी तुम्हारा जूता फटा हुआ है!

मेरा जूता भी कोई अच्छा नहीं है। यों ऊपर से अच्छा दिखता है। अँगुली बाहर नहीं निकलती, पर अँगूठे के नीचे तला फट गया है। अँगूठा जमीन से घिसता है और पैनी मिट्टी पर कभी रगड़ खाकर लहलुहान भी हो जाता है। पूरा तला गिर जाएगा, पूरा पंजा छिल जाएगा, मगर अँगुली बाहर नहीं दिखेगी। तुम्हारी अँगुली दिखती है, पर पाँव सुरक्षित है। मेरी अँगुली ढँकी है, पर पंजा नीचे घिस रहा है। तुम परदे का महत्व ही नहीं जानते, हम परदे पर कुर्बान हो रहे हैं!

- 1 जूता हमेशा टोपी से क्यों कीमती रहा है ?
क छद्मती महंगाई
ख वर्तमान कीमत
ग दिखावे की प्रवृत्ति लगातार छद्मती जा रही है ।
घ छद्मता टैक्स
- 2 जूते और टोपी के आनुपातिक मूल्य के मारे हुए का आशय है ?
क अधिक मूल्य होने से जूता न खरीद पाना ।
ख जूते की अपेक्षा टोपी को अधिक महत्व देना ।
ग आडंबर की अपेक्षा आत्मसम्मान को अधिक महत्व देना ।
घ टोपी पहनने में अधिक रुचि दिखाना ।
- 3 प्रेमचंद क्या-क्या कहलाते थे ?
क उपन्यास-सम्राट
ख युग-प्रवर्तक
ग महान कथाकार
घ उपरोक्त सभी
- 4 लेखक का जूता कैसा था ?
क नया
ख थोड़ा फटा
ग अँगुली से फटा
घ तले से फटा
- 5 तुम परदे का महत्व ही नहीं जानते, हम परदे पर कुर्बान हो रहे हैं! कहकर लेखक ने किस पर व्यंग्य किया है ?
क लेखक पर

ख नयी पीढ़ी पर
ग राजनेताओं पर
घ उपरोक्त सभी पर

मेरे बचपन के दिन

1 बचपन की स्मृतियों में एक विचित्र-सा आकर्षण होता है। कभी-कभी लगता है, जैसे सपने में सब देखा होगा। परिस्थितियाँ बहुत बदल जाती हैं। अपने परिवार में मैं कई पीढ़ियों के बाद उत्पन्न हुई। मेरे परिवार में प्रायः दो सौ वर्ष तक कोई लड़की थी ही नहीं। सुना है, उसके पहले लड़कियों को पैदा होते ही परमधाम भेज देते थे। फिर मेरे बाबा ने बहुत दुर्गा-पूजा की। हमारी कुल-देवी दुर्गा थीं। मैं उत्पन्न हुई तो मेरी बड़ी खातिर हुई और मुझे वह सब नहीं सहना पड़ा जो अन्य लड़कियों को सहना पड़ता है। परिवार में बाबा फारसी और उर्दू जानते थे। पिता ने अंग्रेजी पढ़ी थी। हिंदी का कोई वातावरण नहीं था।

1 इस गद्यांश के लेखक/लेखिका का नाम है

क शुभद्रा कुमारी चौहान
ख हजारीप्रसाद द्विवेदी
ग महादेवी वर्मा
घ माखनलाल चतुर्वेदी

2 बचपन की स्मृतियों में एक विचित्र-सा आकर्षण होता है का आशय है ?

क हम अपना बचपन कभी नहीं भूलते ।
ख हमें बचपन की बातें अकसर याद आती हैं ।
ग हमें अपना बचपन अत्यंत प्रिय है ।
घ उपरोक्त में से कोई नहीं ।

3 यह गद्यांश किस विधा से संबंधित है ?

क कहानी
ख निबंध
ग टायरी
घ संस्मरण

4 परमधाम भेजने का आशय है ?

क घर भेजना
ख तीर्थयात्रा में भेजना
ग मार डालना
घ पत्र भेजना

5 लेखिका के घर में किस भाषा का प्रयोग नहीं होता था ?

क उर्दू
ख फारसी
ग अंग्रेजी
घ हिन्दी

2 उस समय यह देखा मैंने कि सांप्रदायिकता नहीं थी। जो अवध की लड़कियाँ थीं, वे आपस में अवधी बोलती थीं बुंदेलखंड की आती थीं, वे बुंदेली में बोलती थीं। कोई अंतर नहीं आता था और हम पढ़ते हिंदी थे। उर्दू भी हमको पढ़ाई जाती थी, परंतु आपस में हम अपनी भाषा में ही बोलती थीं। यह बहुत बड़ी बात थी। हम एक मेस में खाते थे, एक प्रार्थना में खड़े होते थे कोई विवाद नहीं होता था।

1 तत्कालीन भारत में क्या नहीं था ?

- क जातिवाद
ख साम्प्रदायिकता
ग भाषावाद
घ ख ग ग
- 2 छात्रावास की लड़कियाँ अपने प्रांतवासी लड़कियों से आपस में कौन सी भाषा बोलती थी ?
क अवधी
ख छुंदेली
ग प्रांतीय बोली
घ हिन्दी
- 3 लेखिका और उनकी सहपाठिनें किस भाषा में पढ़ती थी ?
क अवधी
ख उर्दू
ग हिन्दी
घ ख ग ग
- 4 इस अवतरण में क्या नहीं कहा गया है ?
क लेखिका और उनकी सहपाठिनें एक मेस में खाते थे
ख लेखिका और उनकी सहपाठिनें एक प्रार्थना में खड़े होते थे
ग लेखिका और उनकी सहपाठिनें हिन्दी में बातें करती थी ।
घ लेखिका और उनकी सहपाठिनें में कोई विवाद नहीं होता था ।
- 5 यह गद्यांश किस पाठ से लिया गया है ?
क एक कुत्ता और एक मैना
ख मेरे बचपन के दिन
घ प्रेमचंद के फटे जूते
घ लहारा की ओर

एक कुत्ता और एक मैना

1 इस वाक्यहीन प्राणिलोक में सिर्फ यही एक जीव अच्छा-बुरा सबको भेदकर संपूर्ण मनुष्य को देख सका है, उस आनंद को देख सका है, जिसे प्राण दिया जा सकता है, जिसमें अहैतुक प्रेम ढाल दिया जा सकता है, जिसकी चेतना असीम चैतन्य लोक में राह दिखा सकती है। जब मैं इस मूक हृदय का प्राणपण आत्मनिवेदन देखता हूँ, जिसमें वह अपनी दीनता बताता रहता है, तब मैं यह सोच ही नहीं पाता कि उसने अपने सहज बोध से मानव स्वरूप में कौन सा मूल्य आविष्कार किया है, इसकी भाषाहीन दृष्टि की करुण व्याकुलता जो कुछ समझती है, उसे समझा नहीं पाती और मुझे इस सृष्टि में मनुष्य का सच्चा परिचय समझा देती है।' इस प्रकार कवि की मर्मभेदी दृष्टि ने इस भाषाहीन प्राणी की करुण दृष्टि के भीतर उस विशाल मानव-सत्य को देखा है, जो मनुष्य, मनुष्य के अंदर भी नहीं देख पाता।

1 कौन सा जीव अच्छा-बुरा सबको भेदकर संपूर्ण मनुष्य को देख सका है

- क गाय
ख कुत्ता
ग मैना
घ ख ग ग
- 2 अहैतुक प्रेम का आशय है ?

- क आभासिक प्रेम
ख शास्त्रीयिक प्रेम
ग सहज प्रेम
घ निष्काम प्रेम
- 3 मूक हृदय का प्राणपण आत्मनिवेदन कौन करता है
क रवीन्द्रनाथ टैगोर
ख लेखक
ग कुत्ता
घ मैना
- 4 यह गद्यांश किस प्रकार की रचना है
क निबंध
ख कहानी
ग उपन्यास अंश
घ संस्मरणात्मक निबंध
- 5 इस पाठ तथा लेखक का नाम है
क रवीन्द्रनाथ टैगोर, एक कुत्ता और एक मैना
ख हजारीप्रसाद द्विवेदी, एक कुत्ता और एक मैना
ग महादेवी वर्मा, मेरे जन्मदिन के दिन
घ जाजिर हुसैन, बाँवले बपनों की याद

2 एक दूसरी बार मैं सवेरे गुरुदेव के पास उपस्थित था। उस समय एक लगड़ी मैना फुदक रही थी। गुरुदेव ने कहा, देखते हो, यह यूथभ्रष्ट है। रोज फुदकती है, ठीक यहीं आकर। मुझे इसकी चाल में एक करुण-भाव दिखाई देता है।, गुरुदेव ने अगर कह न दिया होता तो मुझे उसका करुण-भाव एकदम नहीं दीखता। मेरा अनुमान था कि मैना करुण भाव दिखानेवाला पक्षी है ही नहीं। वह दूसरों पर अनुकंपा ही दिखाया करती है।

- 1 गुरुदेव के पास कौन उपस्थित था।
क लेखक
ख रवीन्द्रनाथ टैगोर
ग जाजिर हुसैन
घ उनके शिष्य
- 2 मैना कैसी थी
क सुंदर
ख लगड़ी
ग पूर्ण अवस्था
घ उपरोक्त में से कोई नहीं।
- 3 गुरुदेव को मैना की चाल में कैसा भाव दिखाई ?
क सहज भाव
ख घमंडी
ग करुण भाव
घ चंचलता
- 4 लेखक के अनुसार मैना कैसी थी ?
क भेष पर दया दिखाने वाली
ख घमंडी
ग करुण भाव की
घ चंचल अवस्था की

5 यूथभ्रष्ट का आशय है ?

- क चंचल
- ख लुब्धी ब्रह्माय की
- ग झुंड से निकला
- घ चंचल ब्रह्माय की

नाना साहब की पुत्री देवी मैना को
भस्म कर दिया गया

गद्यांश (1) 1 ख 2 क 3 ग 4 घ 5 ख

गद्यांश (2) 1 क 2 ग 3 घ 4 क 5 ख

प्रेमचंद के फटे जूते

गद्यांश (1) 1 ग 2 ख 3 ग 4 ग 5 घ

गद्यांश (2) 1 ग 2 ग 3 घ 4 घ 5 ख

मेरे बचपन के दिन

गद्यांश (1) 1 ग 2 ख 3 घ 4 ग 5 घ

गद्यांश (2) 1 घ 2 ग 3 घ 4 ग 5 ख

एक कुत्ता और एक मैना

गद्यांश (1) 1 ख 2 घ 3 ग 4 घ 5 क

गद्यांश (2) 1 क 2 ख 3 ग 4 क 5 ग

गद्य पाठों पर आधारित लघुत्तरीय प्रश्न

नाना साहब की पुत्री देवी मैना को भस्म कर दिया गया

1. बालिका मैना ने सेनापति 'हे' को कौन-कौन से तर्क देकर महल की रक्षा के लिए प्रेरित किया ?

उत्तर - बालिका मैना ने सेनापति 'हे' को निम्नलिखित तर्क देकर महल की रक्षा के लिए प्रेरित किया -

- 1 यह मकान गिराने में आपका क्या उद्देश्य है ?
- 2 आपके विरुद्ध जिन्होंने शस्त्र उठाये थे, वे दोषी हैं पर इस जड़ पदार्थ मकान ने आपका क्या अपराध किया है ?
- 3 यह स्थान मुझे बहुत प्रिय है ।

2. मैना जड़ पदार्थ मकान को बचाना चाहती थी पर अंग्रेज उसे नष्ट करना चाहते थे। क्यों ?

उत्तर - मैना को वह महल प्रिय था क्योंकि वह उसका निवास स्थान था जबकि अंग्रेज उसे नष्ट करना चाहते थे क्योंकि वह 1857 के विद्रोहियों का नामों निशान मिटाकर भविष्य में अंग्रेज शासन को सुरक्षित करना चाहते थे ।

3. सर टमस 'हे' के मैना पर दया-भाव के क्या कारण थे ?

उत्तर - सर टमस 'हे' के मैना पर दया-भाव के निम्नलिखित कारण थे -

- 1 वह एक दयालु और उदार हृदय के व्यक्ति थे ।
- 2 जब उन्हें पता चला कि मैना उसकी दिवंगत पुत्री की बख्शी है तो उसे मैना के प्रति अहानुभूति हो गई ।
- 3 वे बचपन से मैना के प्रति छेटी के समान प्रेम करते थे ।

4. मैना की अंतिम इच्छा थी कि वह उस प्रासाद के ढेर पर बैठकर जी भरकर रो ले लेकिन पाषाण हृदय वाले जनरल ने किस भय से उसकी इच्छा पूर्ण न होने दी ?

उत्तर — जनरल आउटरूम को इस बात का भय था कि यदि उन्होंने मैना के प्रति उदारता दिखाई तो लंदन की सरकार उसपर कड़ी कार्रवाई करेगी। इंग्लैंड की सरकार और जनता के खदला लेने भावना के कारण वह मैना की सहायता नहीं कर सका।

5. 'टाइम्स' पत्र ने 6 सितंबर को लिखा था — 'बड़े दुख का विषय है कि भारत सरकार आज तक उस दुर्दांत नाना साहब को नहीं पकड़ सकी'। इस वाक्य में 'भारत सरकार' से क्या आशय है ?

उत्तर — इसका आशय लंदन स्थित ब्रिटिश सरकार है जो ईस्ट इण्डिया कंपनी के माध्यम से देश पर शासन कर रही थी।

प्रेमचंद के फटे जूते

1. प्रेमचंद के फटे जूते के आधार पर प्रेमचंद के व्यक्तित्व की विशेषताएँ बताइए ?

उत्तर — प्रेमचंद के व्यक्तित्व की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं —

1. वे आदमी प्रिय थे।
2. समाज की कुशितियों व रूढ़ियों का विरोध करते थे।
3. ऊपरी दिखावा करना उन्हें पसंद नहीं था।
4. आदर्शवादी और सिद्धांतवादी थे।

3. पंक्तियों में निहित व्यंग्य को स्पष्ट कीजिए—

क जूता हमेशा टोपी से कीमती रहा है। अब तो जूते की कीमत और बढ़ गई है और एक जूते पर पचीसों टोपियाँ न्योछावर होती हैं।

ख तुम परदे का महत्व ही नहीं जानते, हम परदे पर कुर्बान हो रहे हैं।

ग जिसे तुम घृणित समझते हो, उसकी तरफ हाथ की नहीं, पाँव की अँगुली से इशारा करते हो ?

उत्तर क — जूता यहाँ आडंबर का प्रतीक है तो टोपी आत्मसम्मान का। यहाँ आत्मसम्मान के स्थान पर आडंबर को अधिक महत्व देने की मानसिकता पर चोट की गई है।

उत्तर ख — यहाँ आज की पीढ़ी की दिखावे की मनोवृत्ति पर व्यंग्य है जो पारंपरिकता के स्थान पर ऊपरी दिखावे को ज्यादा पसंद करती है।

उत्तर ग — प्रेमचंद अद्वैत सामाजिक रूढ़ियों का विरोध करते रहे। उन्हें पैरों से ठोककर लगाते रहे इसलिए उनके जूते फट गये। उन्होंने अपने सिद्धांतों से कभी समझौता नहीं किया।

5. प्रेमचंद के फटे जूते पाठ में मूलतः किसे पर व्यंग्य है ?

उत्तर — इस पाठ में मूलतः वर्तमान पीढ़ी पर कबारा है जो दिखावा और ढोंग पर अवलम्बित है। जो आडंबर से लड़ना और आदर्शों पर अडिग रहना नहीं चाहता है। वह पारंपरिकता से मुँह फेरकर दिखावा करते हैं और उनमें सब को बेपीकारने का आह्वान है न रूढ़ियों से टकराने का दम।

मेरे बचपन के दिन में

1. महादेवी वर्मा के जन्म के समय लड़कियों की दशा कैसी थी ?

उत्तर — तत्कालीन भारत में बेटों की दशा अच्छी न थी। बचपन लेखिका के परिवार में पिछली कई पीढ़ी से कन्या को जन्म लेते ही मार डाला जाता था।

।उन्हे लड़कों की तरह शिक्षा प्राप्त करने का अवसर नहीं दिया जाता था ।उन्हे परदे में रहना पड़ता था ।

2.लेखिका उर्दू-फारसी क्यों नहीं सीख पाई ?

उत्तर — महादेवी रमा को खचपन में पढ़ाने के मौलवी रखा गया पर उनकी उम्रमें रुचि न थी । जख मौलवी आहण आए तो वह डरकर चारपाई के नीचे छिप गई ।

3.लेखिका ने अपनी माँ के व्यक्तित्व की किन विशेषताओं का उल्लेख किया है ?

उत्तर — लेखिका के घर में हिंदी का कोई वातावरण नहीं था। उनकी माता जबलपुर से आई तब वे अपने साथ हिंदी लाई। वे पूजा-पाठ बहुत करती थीं। पहले-पहल उन्होंने लेखिका को 'पंचतंत्र' पढ़ना सिखाया। खचपन में माँ लिखती

थीं, पद भी गाती थीं। मीरा के पद विशेष रूप से गाती थीं। सवेरे 'जागिए कृपानिधान पंछी बन बोले' यही सुना जाता था। प्रभाती गाती थीं। शाम को मीरा का कोई पद गाती थीं। इक्षप्रकार वे धार्मिक मनोवृत्ति की महिला थी ।

4. जवारा के नवाब के साथ अपने पारिवारिक संबंधों को लेखिका ने आज के संदर्भ में स्वप्न जैसा क्यों कहा है ?

उत्तर — लेखिका का परिवार जहाँ रहता था वहाँ जवारा के नवाब रहते थे। उनकी नवाबी छिन गई थी। वे एक बंगले में रहते थे। उसी कंपांड में लेखिका का परिवार रहता था । लेखिका को बेगम साहिबा कहती थीं—'हमको ताई कहो!' वे लोग उनको 'ताई साहिबा' कहते थे। उनके बच्चे महादेवी की माँ को चची जान कहते थे। लेखिका का जन्मदिन वहाँ मनाए जाते थे। उनके जन्मदिन लेखिका के यहाँ मनाए जाते थे। उनका एक लड़का था। वे उसे राखी बाँधने के लिए कहती थीं। मुहर्रम में हरे कपड़े उनके लिए भी बनते थे। लेखिका के छोटे भाई का मनमोहन नाम बेगम ने ही दिया था ।

आज साम्प्रदायिकता के खदने से हिन्दु मुस्लिम भाईचारे का यह उदाहरण

दुर्लभ हो गया है ।अख यह एक खपने जैसा लगता है ।

एक कुत्ता और एक मैना

1. गुरुदेव ने शान्तिनिकेतन को छोड़ कहीं और रहने का मन क्यों बनाया ?

उत्तर — गुरुदेव रवीन्द्रनाथ ने शान्तिनिकेतन छोड़कर कहीं और रहने का मन इसलिए बनाया क्योंकि उनका स्वास्थ्य अच्छा न था । वे स्वास्थ्य लाभ लेने के लिए श्रीनिकेतन चले गये ।

2. मूक प्राणी मनुष्य से कम संवेदनशील नहीं होते। पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर — इस पाठ में एक कुत्ता और एक मैना के माध्यम से बताया गया कि मूक प्राणी मनुष्य से कम संवेदनशील नहीं होते। जख गुरुदेव श्री निकेतन में थे तो उनका पालतु कुत्ता उन्हें ढूँढता चला आया । प्रतिदिन प्रातःकाल यह भक्त कुत्ता स्तब्ध होकर गुरुदेव के आसन के पास तब तक बैठा रहता है, जब तक अपने हाथों के स्पर्श से इसका संग नहीं स्वीकार करते। जब गुरुदेव का चिताभस्म कोलकाता से आश्रम में लाया गया, उस समय भी न जाने किस सहज बोध के बल पर वह कुत्ता आश्रम के द्वार तक आया और चिताभस्म के साथ अन्यान्य आश्रमवासियों के साथ शान्त गंभीर भाव से उतरायण तक गया। इसी प्रकार मैना श्री करुणा की मूर्ति है

। इन उदाहरणों से साबित होता है कि मूक प्राणी मनुष्य से कम संवेदनशील नहीं होते।

3. गुरुदेव द्वारा मैना को लक्ष्य करके लिखी कविता के मर्म को लेखक कब समझ पाया ?

उत्तर — गुरुदेव द्वारा मैना को लक्ष्य करके लिखी कविता के मर्म को लेखक तब समझ पाया जब गुरुदेव ने उन्हें मैना की करुण छवि से अवगत कराया। जब उन्होंने मैना के करुण रूप को पहचाना तभी वे गुरुदेव द्वारा मैना को लक्ष्य करके लिखी कविता के मर्म को लेखक कब समझ पाये।

4. आशय स्पष्ट कीजिए—

इस प्रकार कवि की मर्मभेदी दृष्टि ने इस भाषाहीन प्राणी की करुण दृष्टि के भीतर उस विशाल मानव-सत्य को देखा है, जो मनुष्य, मनुष्य के अंदर भी नहीं देख पाता।

उत्तर — कवि गुरुदेव रवीन्द्रनाथ ने अपनी सूक्ष्म दृष्टि से कुत्ते जैसे भाषाहीन प्राणी के भीतर उस विशाल मानव-सत्य को देखा है, जो मनुष्य, मनुष्य के अंदर भी नहीं देख पाता। ईश्वर के प्रेममय संसार में प्रत्येक प्राणी में निहित प्रेम की अनुभूति को पहचानना उनके जैसे कवि से ही संभव था।

काव्यांश पर आधारित प्रश्न

प्रश्न 1. निम्नलिखित पद्यांशों को पढ़ कर दिए गए संबंधित प्रश्नों के उत्तर दीजिए -

1. देख आया चंद्र गहना।
देखता हूँ दृश्य अब मैं
मेड़ पर इस खेत की बैठा अकेला।
एक बीते के बराबर
यह हरा ठिगना चना,
बाँधे मुरैठा शीश पर
छोटे गुलाबी फूल का
सज कर खड़ा है।

प्रश्न (क) 'चंद्र गहना' क्या है? वह कहाँ बैठकर प्राकृतिक दृश्य देख रहा है?

(ख) कवि चने के पौधे को किस रूप में देखता है?

(ग) खेत की मेड़ किसे कहा गया है?

(घ) 'ठिगना' से क्या आशय है?

(ङ.) चने ने किस चीज़ का मुरैठा पहना हुआ है?

उत्तर (क) चंद्र गहना एक गाँव का नाम है। कवि उस गाँव को देखकर लौटते हुए खेत की मेड़ पर बैठ कर ये प्राकृतिक दृश्य देख रहा है।

(ख) कवि ने चने को सजे-धजे दूल्हे के रूप में देखा है।

(ग) खेत के बीच से जाने के लिए बनाया गया उठा हुआ रास्ता।

(घ) 'ठिगना' से आशय है - छोटे-छोटे पौधे।

(ड.) चने के पौधे पर गुलाबी फूल ऐसा लग रहा मानो किसी दूल्हे ने रंगी पगड़ी पहनी हो।

2. चुप खड़ बगुला डुबाए टोंग जल में,

देखते ही मीन चंचल
ध्यान-निद्रा त्यागता है,
चट दबा कर चोंच में
नीचे गले के डालता है!
एक काले माथ वाली चतुर चिड़िया
श्वेत पंखों के झपाटे मार फौरन
टूट पड़ेती है भरे जल के हृदय पर,
एक उजली चटुल मछली
चेंच पीली में दबा कर
छूर उड़ती है गगन में!

प्रश्न (क) बगुला क्या देखकर ध्यान-निद्रा त्याग देता है ?

(ख) 'टूट पड़ना' का आशय स्पष्ट कीजिए।

(ग) काले माथ वाली चतुर चिड़िया की कैसी चतुराई है ?

उत्तर (क) बगुला सरोवर में तैरती मछली को देख कर ध्यान-निद्रा त्याग देता है।

(ख) तेजी से शिकार पर झपट पड़ना।

(ग) चतुर चिड़िया आकाश से ही तालाब में तैरती उजली मछली को देख लेती है। और अचानक तालाब के जल के मछली पर आक्रमण कर अपनी पीली चोंच में दबा कर आकाश में उड़ जाती है।

3. पेड़ झुक झाँकने लगे गरदन उचकाए,

आँधी चली, धूल भागी घाघरा उठाए,
बाँकी चितवन उठा, नदी ठिठकी, घूँघट सरके।
मेघ आए बड़े बन-ठन के सँवर के।

प्रश्न (क) आँधी किसका प्रतीक है ?

(ख) मेघ किस प्रकार आए ?

(ग) 'घाघरा' से क्या आशय है ?

उत्तर (क) आँधी स्वागत करने वाली कन्या का प्रतीक है। जो उत्साह के कारण अपना घाघरा उठाकर कर दौड़ पड़ी।

(ख) मेघ बन-ठन के और सज-सँवर के आए।

(ग) घाघरा ग्रामीण स्त्रियों का एक परिधान है जिसे कमर पर बाँधा जाता है।

4. बूढ़े पीपल ने आगे बढ़कर जुहार की,

'बरस बाद सुधि लीन्ही'-
बेली अकुलाई लता ओट हो किवार की,
हरसाया ताल लाया पानी परात भर के।
मेघ आए बड़े बन-ठन के सँवर के।

प्रश्न (क) बूढ़ा पीपल किसका प्रतीक है ?

(ख) 'बरस बाद सुधि लीन्ही' का अर्थ स्पष्ट कीजिए।

(ग) 'हरसाया ताल' से क्या आशय है ?

उत्तर (क) बूढ़ा पीपल घर के बड़े-बुजुर्ग का प्रतीक है।

(ख) इसका अर्थ है बहुत दिनों बाद हमें याद किया।

(ग) सरोवर का जल खुशी से चमक उठा।

5. माँ ने एक बार मुझसे कहा था -

दक्षिण की तरफ़ पैर करके मत सोना

वह मृत्यु की दिशा है

और यमराज को क्रुद्ध करना

बुद्धिमानी की बात नहीं

तब मैं छोटा था

और मैंने यमराज के घर का पता पूछा था

उसने बताया था -

तुम जहाँ भी हो वहाँ से हमेशा दक्षिण में।

प्रश्न (क) माँ ने पुत्र को क्यों चेतावनी दी थी ?

(ख) यमराज को क्रुद्ध करने का क्या आशय है ?

(ग) कवि के अनुसार दक्षिण दिशा और मृत्यु का क्या संबंध है ?

(घ) यमराज का घर दक्षिण दिशा में होने का क्या तात्पर्य है ?

(ङ.) दक्षिण का प्रतीकात्मक अर्थ स्पष्ट कीजिए।

उत्तर (क) माँ ने पुत्र को दक्षिण दिशा में पैर करके न सोने की चेतावनी दी। क्योंकि इससे यमराज क्रुद्ध हो जाते हैं तथा मनुष्य की मृत्यु हो सकती है।

(ख) अपने मृत्यु या विनाश को निमंत्रण देना।

(ग) कवि के अनुसार दक्षिण दिशा का प्रतीकार्थ - दक्षिणपंथी विचारधारा है। उसके अनुसार यह विचारधारा मनुष्य को विनाश की ओर ले जाती है।

(घ) दक्षिणपंथी विचारधारा से मौत के दरवाजे खुलते हैं, मनुष्यता का सर्वनाश होता है।

(ङ.) दक्षिणपंथी विचारधारा या पूँजीवादी विचारधारा।

6. पर आज जिधर भी पैर करके सोओ

वही दक्षिण दिशा हो जाती है

सभी दिशाओं में यमराज के आलीशान महल हैं

और वे सभी में एक साथ

अपनी दहकती आँखों सहित विराजते हैं

माँ अब नहीं है

और यमराज की दिशा भी वह नहीं रही

जो माँ जानती थी।

प्रश्न (क) सभी दिशाओं में यमराज के आलीशान महल होने का क्या आशय है ?

(ख) माँ के समय और वर्तमान समय में क्या अंतर आ चुका है ?

(घ) दहकती आँखें क्या व्यक्त करती हैं ?

उत्तर (क) इसका अर्थ है शोषणकर्ताओं की स्थापित व्यवस्था। आज जीवन के सभी क्षेत्रों में शोषणकर्ताओं ने अपना जाल फैला लिया है।

(ख) माँ के समय में केवल एक ही दिशा दक्षिण थी। शेष दिशाओं में कोई खतरा नहीं था। लेकिन वर्तमान समय में सारी दिशाएँ दक्षिण हो चुकी हैं अर्थात् आज शोषण और विनाश की शक्तियाँ सब ओर फैल चुकी हैं।

(ग) 'दहकती आँखें' कोध, हिंसा और शोषण की कठोरता को व्यक्त करती हैं।

7. क्या अंतरिक्ष में गिर गई हैं सारी गेंदें
 क्या दीमकों ने खा लिया है
 सारी रंग बिरंगी किताबों को
 क्या काले पहाड़ के नीचे दब गए हैं सारे खिलौने
 क्या किसी भूकंप में ढह गई हैं
 सरे मदरसों की इमारतें
 क्या सारे मैदान, सारे बगीचे और घरों के आँगन
 खत्म हो गए हैं एकाएक
- प्रश्न (क) कवि गेंदों के खत्म होने की बात क्यों कह रहा है ?
 (ख) कवि की हताशा और निराशा का क्या कारण है ?
 (ग) कवि रंगीन किताबें, गेंदें, खिलौने, मदरसे, मैदान, बगीचे, आँगन क्यों चाहता है ?
 (घ) मदरसों से क्या आशय है ?
 (ङ.) 'काले पहाड़' किसके प्रतीक हैं ?
- उत्तर (क) कवि बच्चों को उनके बचपन लौटाना चाहता है। वह प्रश्न उठाकर बाल-मजदूरों की समस्या को इंगित करता है और समाज को इस चिंता से परिचित कराना चाहता है।
 (ख) बच्चों का मन मार कर बाल-मजदूरी करने के कारण कवि हताश और निराश है।
 (ग) ताकि नन्हें बच्चे खेल-कूद सकें और निश्चित जीवन जी सकें।
 (घ) विद्यालय।
 (ङ.) 'काले पहाड़' शोषण की व्यवस्था से संबंधित है।
8. तो फिर बचा ही क्या है इस दुनिया में ?
 कितना भयानक होता अगर ऐसा होता
 भयानक है लेकिन इससे भी ज्यादा यह
 कि हैं सारी चीजें हस्बमामूल
 पर दुनिया की हजारों सड़कों से गुजरते हुए
 बच्चे, बहुत छोटे-छोटे बच्चे
 काम पर जा रहे हैं।
- प्रश्न (क) 'तो फिर बचा ही क्या है इस दुनिया में' का आशय स्पष्ट कीजिए।
 (ख) अधिक भयानक स्थिति क्या है ?
 (ग) कवि बच्चों के काम पर जाने पर चिंतित क्यों है ?
- उत्तर (क) इस पंक्ति का आशय है कि अगर नन्हें बच्चों को बचपन की सारी सुविधाएँ न मिले तो वह जीवन निरर्थक है। ऐसा जीवन आनंदपूर्ण नहीं हो सकता।
 (ख) कवि के अनुसार संसार में बच्चों के खेल मनोरंजन और पढ़ाई के लिए वस्तुओं की कमी अधिक भयानक स्थिति है।
 (ग) कवि को लगता है कि बच्चों को खेल-कूद और पढ़ाई लिखाई में मस्त रहना चाहिए। बचपन अपने सुख और विकास के लिए होता है उन पर रोजी-रोटी कमाने का बोझ नहीं डालना चाहिए।

लघूत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दीजिए -

1. सरसों को 'सयानी' कहकर कवि क्या बताना चाहता है ?

उत्तर - कवि बताना चाहता है कि अब सरसों की फसल पक कर तैयार हो चुकी है। उसका पूरा विकास हो चुका है।

2. 'चाँदी का बड़ा-सा गोल खंभा' में कवि की किस सूक्ष्म कल्पना का आभास मिलता है ?

उत्तर - सरोवर के जल में सूर्य की किरणें सीधी पड़ती हैं तो ऐसा लगता है जैसे पानी के नीचे चाँदी का बड़ा गोल खंभा चमक रहा है।

3. 'चंद्र गहना से लौटती बेर' कविता का प्रतिपाद्य क्या है ?

उत्तर - कवि कहना चाहता है कि प्रकृति की गोद में बैठकर प्रकृति के उपादानों के द्वारा मनुष्य में प्रेम, अनुराग, प्रणय, आत्मीयता, मानसिक विश्राम जैसे आनंद का जितना अनुभव होता है उतना नगर के हलचलपूर्ण जीवन में संभव नहीं है।

4. 'प्रेम की प्रिय भूमि उपजाऊ अधिक है' किसके लिए कहा है और क्यों ?

उत्तर - यह कथन गाँव की एकांत प्रेममयी धरती के लिए कहा गया है क्योंकि गाँव में दूर-दूर तक खेत फैले हैं उनमें प्रकृति रंगबिरंगे फूलों से सज कर श्रृंगार किए खड़ी है और स्वयंभर रचा जा रहा है। यह धरती न केवल प्रेमपूर्ण है बल्कि उपजाऊ भी है।

5. चने के पौधे को टिगना क्यों कहा गया है ? वह किस प्रकार सजकर खड़ा है ?

उत्तर - चने का पौधा लम्बाई में अधिक ऊँचा नहीं होने के कारण से टिगना कहा गया है। उसके सिर पर गुलाबी फूल उगने के कारण ऐसा लगता है मानो वह सज-धजकर दूल्हा बना हुआ है।

6. मेघों के लिए 'बन-ठन के, सँवर के' आने की बात क्यों कही गयी है ?

उत्तर - क्योंकि मेघों के आने पर गाँव वासियों के मन में ठीक वैसा ही उल्लास होता है, जैसा कि किसी सजे-सँवरे दामाद के आने पर होता है। अतः मेघों के लिए सजे-सँवरे शहरी दामाद होने की बात कही गयी है।

7. मेघ आए कविता में मेघ के आगमन का किस प्रकार चित्रण हुआ है ?

उत्तर - कविता में मेघ को सजे-सँवरे शहरी अतिथि के रूप में चित्रण किया गया है जो बड़ी प्रतीक्षा के बाद गाँव में आया है।

8. गली-गली में दरवाजे-खिड़कियाँ क्यों खुलने लगे ?

उत्तर - मेघ और वर्षा के स्वागत में आनंद लूटने के लिए गली-गली में दरवाजे-खिड़कियाँ खुलने लगे।

9. कवि ने पीपल को ही बड़ा बुजुर्ग क्यों कहा है ?

उत्तर - गाँववासी पीपल के पेड़ को शुभ मानते हैं। और प्रायः हर गाँव में एक पुराना पीपल का पेड़ अवश्य होता है। पुराना होने के कारण उसे बड़ा बुजुर्ग कहा गया है।

10. 'क्षमा करो गाँठ खुल गई अब भ्रम की' - भाव स्पष्ट कीजिए।

उत्तर - प्रियतमा अपने प्रिय से क्षमा मांगते हुए बोली मुझे क्षमा करो मैंने सोचा था तुम नहीं आओगे। परंतु तुम खुब आए हो इस लिए मेरे मन का संदेह मिट गया।

11. माँ को ईश्वर की सलाह पाकर क्या लाभ मिलता था ?

उत्तर - माँ ईश्वर की सलाह पाकर जीवन जीने के तरीके सीख लेती है और दुख सहन करने के उपाय जान लेती है।

12. कवि ने ऐसा क्यों कहा कि दक्षिण को लॉघ लेना सम्भव नहीं था ?

उत्तर - दक्षिण दिशा का कोई ओर-छोर नहीं है। वह अनंत है। दक्षिण दिशा शोषण व्यवस्था का प्रतिक है। यह मनोभावना नए-नए रूप धारण करती है। और अमर रहती है।

13. कभी-कभी उचित-अनुचित निर्णय के पिछे ईश्वर का भय दिखाना आवश्यक हो जाता है, इसके क्या कारण हो सकते हैं ?

उत्तर - मानव मन में शुभ-अशुभ दोनों भाव हैं। कभी-कभी उसका अशुभ मनोभाव अधिक जाग्रत हो उठता है तब वह खून, हत्या जैसे घिनौने कार्य भी कर बैठता है। इस स्थिति को बचाने के लिए ईश्वर का भय दिखाना आवश्यक होता है। जिससे कि व्यक्ति मन से मर्यादित हो जाता है और भला इन्सान बन जाता है।

14. कवि दक्षिण दिशा में पैर करके क्यों नहीं सोया ?

उत्तर - क्योंकि कवि की माँ ने बताया था कि ऐसा करने से यमराज क्रुद्ध हो जाते हैं तथा मृत्यु का संकट छा जाता है।

15. कवि को माँ की याद कब आई और क्यों ?

उत्तर - जब कवि दक्षिण दिशा के खतरों को जानने के लिए दूर-दूर तक गया तो उसने देखा कि वहाँ सचमुच विनाश षड्यंत्र थे तब उसे माँ की सीख याद आई और लगा कि माँ ने बचपन में ही इन खतरों के प्रति सावधान कर दिया था।

16. कवि ने समय की भयानक पंक्ति किसे कहा है और क्यों ?

उत्तर - कवि ने बच्चों द्वारा मजदूरी करने की विवशता को अपने युग की सबसे भयानक समस्या कहा है। जिससे कि हर बच्चे को बचपन में खेलने-कूदने और पढ़ने-लिखने का अवसर नहीं मिल पाता।

17. कवि गेदों के खत्म होने का प्रश्न उठा कर क्या कहना चाहता है ?

उत्तर - कवि कहना चाहता है कि इन बाल-मजदूरों की अभी खेलने की आयु है इन्हें काम-काज में नहीं डालना चाहिए। वह समाज को इस चिंता से परिचित कराना चाहता है कि बच्चों को उनका सहज बचपन लौटाया जाना चाहिए।

18. सुविधा और मनोरंजन के उपकरणों से बच्चे वंचित क्यों है ?

उत्तर - समाज की व्यवस्था और गरीबी के कारण बच्चे सुविधा और मनोरंजन के उपकरणों से वंचित है।

19. बच्चों का काम पर जाना धरती के एक बड़े हादसे के समान क्यों है ?

उत्तर - क्योंकि बच्चों का काम पर जाना उनके प्रति घोर अन्याय है। हर बच्चे को जन्म से ही सुख-सुविधाएँ मिलनी चाहिए उन्हें खेल-कूद, मनोरंजन और पढ़ाई-लिखाई का अवसर मिलना चाहिए। परंतु गरीबी और समाज की व्यवस्था के कारण उन्हें मजदूर बन कर काम करना पड़ता है। अतः यह एक भयानक हादसे के समान माना गया है।

20. 'बच्चे काम पर जा रहे हैं' कविता का उद्देश्य स्पष्ट कीजिए।

उत्तर - कविता उद्देश्य है बाल-मजदूरी को रोकना। कवि चाहता है कि बच्चों को खेल-कूद और पढ़ाई-लिखाई का पूरा अवसर मिलना चाहिए। उनके मन मस्तिष्क पर कोई दबाव नहीं होना चाहिए। तथा समाज को भी उनके विकास के लिए चिंता प्रकट करनी चाहिए।

रीढ़ की हड्डी : जगदीश चन्द्र माथुर-

इस एकांकी में समाज में नारी को सम्मानजनक स्थान न दिए जाने की समस्या का प्रभावी चित्रण हुआ है। इस एकांकी में लड़की के विवाह की सामाजिक समस्या मात्र का चित्रण नहीं है। यह एकांकी भारतीय समाज का वास्तविक चेहरा दिखाने में सक्षम है।

लघूत्तरात्मक प्रश्नोत्तर-

प्रश्न 1 “आपके लाडले बेटे की रीढ़ की हड्डी भी है या नहीं।” उमा अपने इस कथन के माध्यम से शंकर की किन कमियों की ओर संकेत करती है? **CBSE 2010**

उत्तर - उमा अपने इस कथन के माध्यम से शंकर की चारित्रहीनता एवं डरपोक स्वभाव की ओर संकेत करती है। शंकर लड़कियों के हास्टल के आस-पास घूमता पकड़ा जाता है और नौकरानी के पैरों गिरकर क्षमा माँगकर किसी तरह छूट कर भागता है।

प्रश्न 2 शंकर जैसे लड़के या उमा जैसी लड़की, समाज को कैसे व्यक्तित्व की ज़रूरत है? तर्क सहित उत्तर दीजिए। **CBSE 2010**

उत्तर- समाज में उमा जैसे व्यक्तित्व की आवश्यकता है। वह सुशिक्षित सभ्य और साहसी लड़की है। वह नारी के अधिकारों के लिए आवाज़ उठाने और जागरूकता लाने का काम करती है।

प्रश्न 3 कथावस्तु के आधार पर एकांकी का मुख्य पात्र कौन है और क्यों? **CBSE2010**

उत्तर- कथावस्तु के आधार पर एकांकी का मुख्य पात्र उमा है। लेखक ने उमा के माध्यम से ही नारी के प्रति अपने विचार व्यक्त किए हैं। वही केन्द्रबिन्दु है एकांकी की कहानी उसी के आस- पास घूमती है। इसीलिए वह एकांकी की मुख्य पात्र है।

प्रश्न 4 क्या शंकर जैसा लड़का उमा जैसी लड़की के लिए योग्य है?

उत्तर- शंकर जैसा लड़का उमा जैसी लड़की के लिए योग्य तो हो ही नहीं सकता, क्योंकि उमा सुशिक्षित एवं संस्कारवान लड़की है। जबकि शंकर चरित्रहीन और रूढ़िवादी लड़का है।

प्रश्न 5 रामस्वरूप बैठक के कमरे में वाद्य यंत्रों को क्यों रखवाते हैं?

उत्तर- रामस्वरूप की बेटी उमा को लड़के वाले देखने आने वाले हैं। वे कमरे की सफाई करवा कर वाद्य यंत्र रखवाते हैं। वे लड़के वालों को दिखाना चाहते हैं कि उमा को संगीत का ज्ञान है, वह इसके बल पर लड़के वालों को प्रभावित करना चाहते हैं।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्नोत्तर-

प्रश्न 1 गोपाल प्रसाद विवाह को विज्ञान मानते हैं और रामस्वरूप अपनी बेटी की उच्च शिक्षा छिपाते हैं। क्या आप मानते हैं कि दोनों समान रूप से अपराधी हैं? **तर्क सहित उत्तर दीजिए। CBSE2010**

उत्तर -मेरी दृष्टि में दोनों समान रूप से दोषी हैं। रामस्वरूप उमा की शादी के लिए उसकी उच्च शिक्षा को छिपाते हैं। मेरे विचार से रामस्वरूप को ऐसे परिवार में अपनी बेटी का रिश्ता जोड़ने की नहीं सोचना चाहिए था, जहाँ शिक्षा का सम्मान न हो। रामस्वरूप को उमा को शिक्षित करने पर अपराध नहीं गर्व महसूस करना चाहिए था। दूसरी ओर गोपाल प्रसाद विवाह को विज्ञान मानते हैं। वह ऐसी पड़ताल करते हैं मानो विवाह नहीं फर्नीचर खरीदने आए हों। वह यह भूल जाते हैं कि विवाह विज्ञान नहीं पवित्र बंधन होता है। झूठ की बुनियाद पर खड़ा रिश्ता कभी सफल नहीं होता है। अतः मेरी दृष्टि में दोनों अपराधी हैं।

प्रश्न 2 उमा ने गोपाल प्रसाद से जो व्यवहार किया, वह कहाँ तक उचित है?

उत्तर- गोपाल प्रसाद पुरातनपंथी सोच के प्रतीक हैं। ऐसे लोग स्त्री शिक्षा के विरोधी और नारी को उपभोग की वस्तु मानते हैं। उनके विचार से शिक्षित नारी अपने अधिकारों के लिए सजग हो जाएगी, पुरुष के गलत कार्यों का विरोध करेगी, जो उचित नहीं है। वे शिक्षा को सिर्फ लड़कों के लिए ज़रूरी मानते हैं। उमा ने उनके नारी शिक्षा विरोधी विचारों को जानकर ही कहा कि- मैंने बी ए किया है, कोई पाप नहीं किया है।

उमा द्वारा गोपाल प्रसाद के साथ किया गया व्यवहार सर्वथा उचित है। लड़का- लड़की समान हैं। लड़की के विरुद्ध सोच रखने वाले को इसी तरह की लताड़ की ज़रूरत रहती है।

माटी वाली : विद्यासागर नैटियल

माटी वाली पाठ में विस्थापन की समस्या का मर्मस्पर्शी चित्रण किया गया है। इस समस्या से मज़दूर तथा गरीब लोगों को सर्वाधिक दुःख भोगना पड़ता है। आधुनिकता और विकास के नाम पर हम गरीब आदमी का शमशान भी उजाड़े दे रहे हैं। हमारा ध्यान सर्वहारा की ओर होना चाहिए।

लघूत्तरात्मक प्रश्नोत्तर-

प्रश्न 1 'शहरवासी सिर्फ माटी वाली को ही नहीं उसके कंटर को भी अच्छी तरह पहचानते हैं।' आपकी समझ में वे कौन से कारण रहे होंगे, जिनके रहते माटी वाली को सब पहचानते थे? **CBSE2010**

अथवा

टिहरी शहरवासियों के लिए माटी वाली का क्या महत्व है? वे माटी वाली को किस तरह पहचानते थे, संक्षेप में लिखें।

उत्तर- माटी वाली की लाल मिट्टी से सभी टिहरीवासियों का चूल्हा -चौका पोता जाता था। पूरे शहर में वह अकेली महिला थी, जो हर घर में लाल मिट्टी पहुँचाती थी। उसके पास बिना ढक्कन का कनस्तर था। यही कारण था कि उस माटी वाली को सभी पहचानते थे।

प्रश्न 2 माटी वाली के पास अपने अच्छे या बुरे भाग्य के बारे में ज्यादा सोचने का समय क्यों नहीं था? **CBSE2010**

उत्तर माटी वाली के पास अपने अच्छे या बुरे भाग्य के बारे में ज्यादा सोचने का समय नहीं था। क्योंकि वह सुबह से शाम तक काम में भिड़ी रहती थी। काम नहीं होता तो पेट की चिन्ता और बढ़ जाती। वह अपने से ज्यादा अपने बुढ़ड़े के बारे में सोचती थी।

प्रश्न 3 'भूख मीठी कि भोजन मीठा' से क्या अभिप्राय है? **CBSE 2010**

उत्तर - भूख व्यक्ति का ध्यान भोजन पर होता है न कि भोजन के स्वाद पर। इसका अर्थ यह है कि भूख के वक्त स्वादिष्ट भोजन नहीं देखा जाता, मात्र भूख मिटाने का उपाय सोचा जाता है। भूखे आदमी को खूब- खूब भोजन भी मीठा लगता है।

प्रश्न 4 माटी लाने के आदेश के साथ माटी वाली को क्या मिला? उसे पाकर वह क्या सोचने लगी?

उत्तर- माटी वाली को माटी लाने के आदेश के साथ दो रोटियाँ मिलीं। उसने रोटियों को अपने बुढ़ड़े के लिए कपड़े में बाँध लिया। वह रास्ते भर सोचती जा रही थी कि रोटियाँ पाकर बुढ़ड़े का चेहरा खिल जाएगा।

प्रश्न 5 टिहरी प्रोजेक्ट से ग्रामवासियों के जीवन पर क्या प्रभाव पड़ा, संक्षेप में लिखिए?

उत्तर- टिहरी बाँध की दो सुरंगों को जैसे ही बन्द किया गया वैसे ही शहर में आपाधापी मच गई, क्योंकि शहर में तेजी से पानी भरने लगा था। लोग अपने- अपने घरों को छोड़कर भाग रहे थे। पानी भरने के कारण श्मशान घाट भी डूब गया था। माटी वाली अपने झोपड़े के सामने बैठी थी। उसका बुढ़ड़ा परलोक सिधार गया था। वह हर आने- जाने वाले से यही कह रही थी कि - " गरीब आदमी का श्मशान नहीं उजड़ना चाहिए। "

दीर्घ उत्तरीय प्रश्नोत्तर-

प्रश्न 1 माटी वाली पाठ में किस समस्या को प्रमुखता से उभरा गया है? पाठ में निहित संदेश स्पष्ट कीजिए?

उत्तर- 'माटी वाली' में विस्थापितों की उस समस्या को रेखांकित किया गया है जो टिहरी बाँध बनने से उत्पन्न हुई थी। इसका सबसे ज्यादा प्रभाव गरीबों लाचार तथा असहाय लोगों पर पड़ा है। लोग विस्थापन की पीड़ा को समझें, उनके प्रति सहानुभूति पूर्वक विचार करें। माटी वाली जिस वर्ग का प्रतिनिधित्व करती है, उसका अन्तिम सहारा श्मशान तक छिन चुका है।

माटी वाली सर्वहारा है। उसके पास न ज़मीन है न कागज़ात, विस्थापन के बाद वह कहाँ जाएगी, उसका क्या होगा? ऐसे ही प्रश्नों का जवाब खोजने की आवश्यकता है। प्रगति की कीमत इसी वर्ग को चुकानी पड़ती है। समाज एवं सरकार को इसी वर्ग के बारे में चिंतन करने की आवश्यकता है।

प्रश्न 2 कैसे के वर्तनों के गायब होने के पीछे लेखक ने समाज की किस प्रवृत्ति पर व्यंग्य किया है।

उत्तर- माटी वाली घरों में माटी देकर कुछ देर ठहरती थी। परस्पर दुख- सुख की बातें होती थीं। घर की मालकिनें उसके दर्द को समझतीं, शाम की बची रोटियाँ उसे दे देतीं। कभी- कभी रोटी के साथ चाय भी मिल जाती थी। एक घर में उसे पीतल के गिलास में चाय मिली तो उसने कहा कि- अब तो घरों में पीतल की गिलास नहीं मिलती। यह सुनकर घर की मालकिन ने कहा- “अब तो घरों से कैसे के बरतन भी गायब हो रहे हैं। लोग कैसे और पीतल की वस्तुओं को रद्दी के भाव बेचते हैं। जब की यह उनके पुरखों के गाढ़ी कमाई से तन- पेट काटकर बनाई हुई होती हैं। लोग इन विरासतों का मूल्य नहीं समझते हैं। वे आधुनिकता तथा फैशन के नाम पर नई वस्तुएँ अपनाते जा रहे हैं।” लेखक ने लोगों की इसी प्रवृत्ति पर व्यंग्य किया है।

किस तरह आखिरकार मैं हिंदी में आया :शमशेर बहादुर सिंह-

इस लेख में लेखक ने बताया है कि पहले वह उर्दू और अंग्रेज़ी में लिखता था किन्तु बाद में उर्दू अंग्रेज़ी को छोड़कर हिंदी में लिखना शुरू कर दिया। उन्होंने अपने जीवन के कष्टों के साथ साथ पंत वच्चन तथा निराला के प्रति अपनी श्रद्धा भी व्यक्त की है।

लघूत्तरात्मक प्रश्नोत्तर-

प्रश्न 1 वच्चनजी ने शमशेर के भविष्य के विषय में क्या योजना बनाई थी?

उत्तर- वच्चनजी शमशेर के भविष्य को लेकर चिंतित रहते थे। वे लेखक को एक काम का आदमी बना देखना चाहते थे। वे चाहते थे कि- लेखक यूनिवर्सिटी से डिग्री लेकर, पैर जमाकर आत्मनिर्भर हो जाए।

प्रश्न 2 शमशेर बहादुर उर्दू और अंग्रेज़ी में लिखता थे फिर हिंदी की ओर कैसे आकर्षित हुए?

उत्तर- लेखक के इलाहाबाद प्रवास के दौरान हिंदी का वातावरण मिला साथ ही मित्रों एवं वच्चन, पंत, निराला से मिले संस्कारों के कारण, वह धीरे-धीरे हिन्दी की ओर आकर्षित हुआ।

प्रश्न 3 लेखक ने कविता में नए अभ्यास किए, उसका क्या परिणाम निकला?

उत्तर- कविता में नए अभ्यास के परिणाम स्वरूप ‘सरस्वती’ में छपी एक कविता ने निराला का ध्यान खींचा। ‘रूपाम’ आफिस में प्रारम्भिक प्रशिक्षण लेकर वे बनारस ‘हंस’ कार्यालय की कहानी में चले गए। अंततः वच्चन जी उन्हें साहित्यिक प्रांगण में खींच लाए।

प्रश्न 4 शमशेर बहादुर बाहर से शांत दिखाई देते थे पर अन्दर से अशांत थे, क्यों?

उत्तर- लेखक की पत्नी की मृत्यु टी वी से हो गई थी। इस दुख से वह अन्दर ही अन्दर टूट गया था। निठल्ला समझकर आत्मीयजन ताने देते थे। इसी कारण लेखक बाहर से शांत और अंदर से अशांत था।

प्रश्न 5 किस्मत उन्हीं का साथ देती है जो कुछ करने के लिए कदम बढ़ाते हैं- पाठ के आधार पर उत्तर दीजिए।

उत्तर- लेखक घर से बिना लक्ष्य के निकल पड़ा। उसे नहीं मालूम था कि कहाँ जाना है। वह भटकता हुआ दिल्ली पहुँचा। पेंटिंग में शौक होने के कारण उसने उकील आर्ट स्कूल दूढ़ा। प्रवेश परीक्षा के माध्यम से बिना फीस के विशेष परिस्थिति में प्रवेश मिल गया। इससे यह सिद्ध होता है कि किस्मत उन्हीं का साथ देती है जो कुछ करने के लिए कदम बढ़ाते हैं।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्नोत्तर-

प्रश्न 1 शमशेर बहादुर ने 'बात का धनी', 'हृदय मक्खन', 'संकल्प फौलाद' जैसे विशेषण किसके लिए प्रयोग किए हैं और क्यों ?

उत्तर- जीवन के संघर्ष काल में लेखक को अपना भविष्य अनिश्चित लग रहा था। जब मंजिल का कहीं पता भी नहीं था, तब बच्चनजी ने बहुत सहयोग किया। लेखक अपने जीवन में बच्चनजी के योगदान को स्वीकार करते हुए कहा है कि - उसने अपने जीवन में जो कुछ प्राप्त किया है, उसमें बच्चन जी का अविस्मरणीय योगदान है। बच्चनजी द्वारा प्राप्त आर्थिक एवं मानसिक सहयोग के कारण ही लेखक यहाँ तक पहुँचा। इसी कारण लेखक बच्चन जी को 'बात का धनी', 'हृदय मक्खन', 'संकल्प फौलाद' जैसे विशेषणों से नवाजता है। उन्होंने किसी की परवाह किए बिना अपने वचन को निभाया। उनका संकल्प फौलाद की तरह मज़बूत था।

प्रश्न 2 'तुम यहाँ रहोगे तो मर जाओगे.....तुम इलाहाबाद जाएगा तो मर जाएगा' ये कथन किसने कहे थे? इनमें से लेखक ने किसे उचित समझा?

उत्तर- शमशेर बहादुर सिंह की पत्नी का निधन टी बी की बीमारी से हो चुका था। ऐसे में एकाकीपन उन्हें खाए जा रहा था, वे बहुत दुखी थे। लेखक की मनःस्थिति को जानकर कवि बच्चन ने कहा कि- तुम यहाँ रहोगे तो मर जाओगे। देहरादून के अकेले परिवेश में पत्नी की यादें सताएँगी। यहाँ कला की अभिव्यक्ति के लिए साहित्यिक वातावरण भी नहीं है, तुम अपने आपको व्यस्त नहीं रख पाओगे, इससे तुम्हारा दुख बढ़ेगा।

लेखक की ऐसी स्थिति देखकर देहरादून के एक डाक्टर को कहा था- तुम इलाहाबाद जाएगा तो मर जाएगा। अर्थात् इलाहाबाद में उनका दुख घटने वाला कोई न होगा। वहाँ पत्नी की याद जीवन को और कठिन बना देगी। लेखक ने दोनों पर विचार करके इलाहाबाद जाने का निर्णय लिया, क्योंकि- बच्चन के सानिध्य में असीम साहित्यिक संसार उनकी बाट जोह रहा था।